e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 12, December 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022||

| 10.15680/IJIRSET.2022.1112133 |

आधुनिक भारतीय चित्रकला में पौराणिक एवं मिथकीय विषयों की अभिव्यंजना

डॉ आशीष कुमार शृंगी

सहायक आचार्य, चित्रकला राजकीय महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान, भारत

सार (**ABSTRACT**)**:** भारतीय कला परंपरा में पौराणिक एवं मिथकीय आख्यान केवल धार्मिक विश्वास का आधार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति, सामूहिक चेतना और सामाजिक संरचना के महत्वपूर्ण स्रोत रहे हैं। आधुनिक भारतीय चित्रकला में इन मिथकीय तत्वों का पुनर्पाठ एक महत्वपूर्ण कलात्मक और वैचारिक प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर समकालीन काल तक कलाकारों ने रामायण, महाभारत, पुराणों तथा लोककथाओं के पात्रों और प्रतीकों को नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। इस शोध-पत्र में आधुनिक भारतीय चित्रकला में मिथकीय विषयों की अभिव्यंजना के स्वरूप, शैलीगत विशेषताओं, वैचारिक आयामों तथा प्रमुख कलाकारों के योगदान का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द: भारतीय कला, पौराणिक एवं मिथकीय, पुनर्पाठ, अभिव्यंजना, वैचारिक आयामों।

भारतीय कला परंपरा में पौराणिक और मिथकीय आख्यानों का स्थान अत्यंत केंद्रीय रहा है। ये आख्यान केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृति, नैतिक मूल्यों और सामूहिक चेतना के वाहक भी हैं। प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन लघुचित्र परंपरा और लोककलाओं तक, रामायण, महाभारत और पुराणों के प्रसंग चित्रकला के प्रमुख विषय रहे हैं। किंतु आधुनिक भारतीय चित्रकला में इन मिथकीय विषयों का स्वरूप केवल पुनरावृत्ति का नहीं, बल्कि पुनर्व्याख्या और पुनर्सृजन का है। आधुनिक कलाकारों ने मिथकों को एक जीवित सांस्कृतिक भाषा के रूप में ग्रहण किया और उन्हें समकालीन संदर्भों में ढालते हुए नई अभिव्यक्ति प्रदान की।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारत में औपनिवेशिक शासन के प्रभाव से पश्चिमी कला शिक्षा का प्रसार हुआ, तब भारतीय चित्रकला के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आने लगे। यथार्थवाद, परिप्रेक्ष्य और प्रकाश-छाया जैसी तकनीकों ने भारतीय कलाकारों के सामने अभिव्यक्ति के नए द्वार खोले। इस संदर्भ में राजा रवि वर्मा का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय पौराणिक विषयों को पश्चिमी यथार्थवादी शैली में चित्रित कर एक ऐसी दृश्य भाषा विकसित की, जो न केवल कलात्मक दृष्टि से प्रभावशाली थी, बल्कि जनसामान्य के लिए भी अत्यंत आकर्षक और सुलभ थी। उनकी कृतियों में लक्ष्मी, सरस्वती, सीता और द्रौपदी जैसी पात्रों को मानवीय संवेदनाओं और शारीरिक यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया, जिससे मिथकीय पात्र आम जनजीवन का हिस्सा बन गए। इस प्रकार, रवि वर्मा ने मिथकों को एक नई दृश्य पहचान दी, जिसने आगे आने वाले कलाकारों को गहराई से प्रभावित किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में बंगाल स्कूल के उदय के साथ भारतीय चित्रकला में एक नई दिशा का विकास हुआ। अवनीन्द्रनाथ टैगोर और नंदलाल बोस जैसे कलाकारों ने पश्चिमी प्रभावों के विरुद्ध भारतीय परंपरा और आध्यात्मिकता की ओर लौटने का प्रयास किया। उनके लिए मिथक केवल कथा नहीं थे, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रतीक थे। इस काल में मिथकीय विषयों को अधिक सूक्ष्म, लयात्मक और आध्यात्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया। यहाँ मिथक का उद्देश्य केवल दृश्यात्मक सौंदर्य नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पहचान की स्थापना था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में तेजी से सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का प्रभाव कला पर भी पड़ा। आधुनिक भारतीय कलाकारों ने मिथकों को स्थिर और पवित्र कथाओं के रूप में स्वीकार करने के बजाय उन्हें एक लचीले और बहुआयामी माध्यम के रूप में देखा। उन्होंने मिथकों को समकालीन जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और विरोधाभासों के संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया। इस प्रक्रिया में मिथक एक प्रकार के प्रतीकात्मक उपकरण (symbolic tool) बन गए, जिनके माध्यम से कलाकार आधुनिक समाज की समस्याओं और अनुभवों को व्यक्त कर सकते थे।

एम.एफ. हुसैन इस संदर्भ में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कलाकार हैं, जिन्होंने भारतीय मिथकों को आधुनिक दृष्टि से प्रस्तुत किया। उनकी कृतियों में रामायण और महाभारत के प्रसंग केवल कथा नहीं रहते, बल्कि वे गति, ऊर्जा और भावनात्मक तीव्रता के माध्यम से एक नए अर्थ का निर्माण करते हैं। उनके चित्रों में घोड़े शक्ति और गति के प्रतीक के रूप में बार-बार उभरते हैं, जबकि देवी-देवताओं

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022||

| 10.15680/IJIRSET.2022.1112133 |

को मानवीय संवेदनाओं और संघर्षों के साथ जोड़ा जाता है। हुसैन के लिए मिथक एक जीवंत और गतिशील भाषा है, जिसके माध्यम से वे आधुनिक भारत की आत्मा को व्यक्त करते हैं।

इसी प्रकार, एफ.एन. सूजा ने मिथकीय और धार्मिक प्रतीकों को एक अलग दृष्टिकोण से देखा। उनकी कृतियों में देवताओं और धार्मिक आकृतियों का विकृत और तीखा रूप आधुनिक समाज की विडंबनाओं और नैतिक संकटों को उजागर करता है। सूजा ने मिथकों को आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि प्रश्न और विरोध के रूप में प्रस्तुत किया। यह दृष्टिकोण आधुनिक कला की उस प्रवृत्ति को दर्शाता है, जिसमें परंपरा को चुनौती दी जाती है और उसे नए अर्थों में पुनर्परिभाषित किया जाता है।

त्येब मेहता की कला में भी मिथकीय विषयों का एक गहरा और गंभीर रूप देखने को मिलता है। उनकी प्रसिद्ध "महिषासुर" श्रृंखला में देवी और असुर के संघर्ष को केवल धार्मिक कथा के रूप में नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व के द्वंद्व और हिंसा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके चित्रों में आकृतियों का खंडन, तीव्र रेखाएँ और सीमित रंग योजना एक ऐसी तनावपूर्ण स्थिति का निर्माण करती हैं, जो आधुनिक जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करती है। यहाँ मिथक एक सार्वभौमिक अनुभव का रूप ले लेता है, जो समय और स्थान की सीमाओं से परे है।

जामिनी रॉय ने मिथकीय विषयों को लोक कला की शैली में प्रस्तुत कर एक अलग ही दृष्टिकोण प्रदान किया। उन्होंने बंगाल की पटचित्र परंपरा से प्रेरणा लेकर सरल रेखाओं, सपाट रंगों और सजावटी संरचना के माध्यम से कृष्ण लीला और रामायण के प्रसंगों को चित्रित किया। उनके लिए मिथक एक जनसांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम था, जो सीधे लोकजीवन से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार, उन्होंने आधुनिकता और परंपरा के बीच एक संतुलन स्थापित किया।

समकालीन काल में नलिनी मलानी और अर्पिता सिंह जैसी महिला कलाकारों ने मिथकों को नारीवादी दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित किया है। उनके कार्यों में द्रौपदी, सीता और काली जैसे पात्रों को आधुनिक महिला के अनुभवों—जैसे उत्पीड़न, हिंसा और संघर्ष—के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। यह दृष्टिकोण मिथकों के भीतर छिपे हुए सत्ता-संबंधों और लैंगिक असमानताओं को उजागर करता है। इस प्रकार, मिथक एक आलोचनात्मक उपकरण बन जाता है, जिसके माध्यम से कलाकार समाज की संरचनाओं पर प्रश्न उठाते हैं।

आधुनिक भारतीय चित्रकला में मिथकीय विषयों की अभिव्यक्ति की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इसमें प्रतीकों और रूपकों का व्यापक प्रयोग होता है। काली, कृष्ण, शिव, त्रिशूल, घोड़े आदि प्रतीक केवल धार्मिक अर्थों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे शक्ति, प्रेम, विनाश, पुनर्जन्म और संघर्ष जैसे व्यापक मानवीय अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके साथ ही, आधुनिक कलाकारों ने अमूर्तन और अभिव्यंजनावाद जैसी शैलियों का प्रयोग कर मिथकीय विषयों को एक बहुस्तरीय और जटिल रूप प्रदान किया है। अब चित्रों में कथा स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती, बल्कि वह संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त होती है, जिसे दर्शक को स्वयं समझना पड़ता है।

लोक और आदिवासी कला परंपराओं का प्रभाव भी आधुनिक मिथकीय चित्रण में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मधुबनी, गोंड और वारली जैसी शैलियों में आज भी मिथकीय विषयों का व्यापक चित्रण होता है। समकालीन कलाकार इन शैलियों को अपनाकर उन्हें वैश्विक मंच पर प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे न केवल इन परंपराओं का संरक्षण होता है, बल्कि मिथकीय विषयों को एक नया और ताजा रूप भी मिलता है।

वैश्वीकरण के इस युग में मिथकीय विषयों का महत्व और भी बढ़ गया है। आज भारतीय कलाकार मिथकों को केवल स्थानीय या राष्ट्रीय संदर्भ में नहीं, बल्कि वैश्विक दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहे हैं। डिजिटल कला, इंस्टॉलेशन और न्यू मीडिया के माध्यम से मिथकों का पुनर्सृजन हो रहा है। इस प्रक्रिया में मिथक एक सार्वभौमिक भाषा बन जाता है, जो विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय चित्रकला में पौराणिक एवं मिथकीय विषयों की अभिव्यंजना एक निरंतर विकसित होती हुई प्रक्रिया है। यह केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि वर्तमान की व्याख्या और भविष्य की संभावनाओं का संकेत है। आधुनिक कलाकारों ने मिथकों को एक जीवित परंपरा के रूप में स्वीकार किया है, जो समय के साथ बदलती रहती है और नए अर्थ ग्रहण करती है। इस प्रकार, मिथक और आधुनिकता के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित होता है, जो भारतीय कला को समृद्ध और प्रासंगिक बनाता है।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

|| Volume 11, Issue 12, December 2022||

| 10.15680/IJIRSET.2022.1112133 |

संदर्भ (REFERENCES)

1. Mitter, Partha. Indian Art. Oxford University Press.
2. Guha-Thakurta, Tapati. The Making of a New Indian Art.
3. Kramrisch, Stella. The Art of India.
4. Coomaraswamy, Ananda K. The Dance of Shiva.
5. Archer, W.G. Indian Paintings from the British Period.
6. Dalmia, Yashodhara. The Making of Modern Indian Art.
7. Dehejia, Vidya. Indian Art.
8. Jain, Jyotindra. Indian Popular Culture.
9. Sinha, Gayatri. Expressions and Evocations.
10. Subramanyan, K.G. Living Traditions.
11. Chaitanya, Krishna. A History of Indian Painting.
12. Avari, Nishad. Modern Indian Art, Christie's.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.423

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com